-निराला-

छायावादी कवियों में निराला का कवि व्यक्तित्व विलसन और सर्वाधिक विद्रोही है। उनकी काव्य यात्रा लगभग 1916ई० से प्रारंभ होकर 1961ई० तक की है। इस बीच की अवधि में निराला का कवि और गद्यकार व्यक्तित्व अनवरत सर्जनशील रहा है। उनका कवि व्यक्तित्व इतना विशद है, गंभीर और मौलिक क्षमता से सम्पन्न है कि दूसरा रचनाकार उनकी बराबरी में नहीं ठहरता।

दूधनाथ सिंह ने इसी तथ्य की तरफ संकेत करते हुए लिखा है कि "संसार की किसी भी भाषा में ऐसे कवि बहुत कम होंगे, जो रचना-स्तरों के अनेक रूपों को साथ-साथ वहन कर सकें और लगातार अनेक मुखी अर्थों वाली कविताएँ रचने में समर्थ हों।" भाषिक संरचना की दृष्टि से निराला के काव्य में जितना वैविध्य है, उतना किसी अन्य कवि के यहाँ नहीं 'कुकुरमुत्ता' नागरी और फारसी दोनों लिपियों में छपी थी।

निराला और मुक्त छंद एक दूसरे के पर्याय हैं। परंपरामुक्त निराला मुक्त छंद के लिए जाने जाते हैं, लेकिन उनकी अधिकांश कृतियाँ छंदोबद्ध हैं। शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, तुलसीदास जैसे उनकी कालजयी रचना छंदोबद्ध है। निराला की कविताओं में अधिकांश कविताएँ गीत हैं। छंद के बंद को तोड़ने वाले, मुक्त छंद के प्रवर्तक निराला की अधिकांश श्रेष्ठ कृतियां छंदों के बंधन में पूरी तरह से बंधी हुई हैं। उनके मुक्त छंद के संदर्भ में एक बात विशेष रूप से ध्यातव्य है कि निराला ने रीतिकालीन रूढ़ियों से विद्रोह किया था। भावों की मुक्ति के लिए छंदों की मुक्ति को उन्होंने अनिवार्य माना था पर यह मुक्ति सापेक्षता की सीमा में बंधी हुयी मुक्ति है। गति और लय छंदबद्ध रचनाओं के प्राण तत्व हैं। मुक्त छंद भी इन बंधनों से मुक्त नहीं है। छंदोबद्ध रचनाएं लय और सेगी से मुक्त हो सकती है पर मुक्त छंद के लिए यह भी छूट नहीं है काव्य को उसके छंद के बंधन से मुक्त करने की आवश्यकता

Scanned by CamScanner

Date
Page

और उसके स्वरूप के संदर्भ में निराला ने लिखा है- "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्य की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है। जिस तरह मुक्त मनुष्य कभी किसी तरह भी दूसरों के प्रतिकूल आचरण नहीं करता, उसके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं, फिर भी स्वतंत्र, इसी तरह कविता का हाल है।" (परिमल भूमिका) ठीक इसी तरह की मुक्ति का आग्रह 'प्रगल्भ प्रेम' शीर्षक कविता में भी देखा जा सकता है -

'आज नहीं ~~कुछ~~ है मुझे और कुछ चाह
अर्ध विकच इस हृदय किमल में आतू.
प्रिये छोड़कर बंधनमय छंदों की छोटी राह।
गजगामिनी, यह पथ तेरा संकीर्ण ~~क~~ कंटकाकीर्ण
कैसे होगी उससे पार।'

छंदों की मुक्ति को निराला ने भावों की मुक्ति से जोड़कर देखा है। वे भावों की मुक्ति के लिये छंदों की मुक्ति को आवश्यक मानते थे। उन्हीं के शब्दों में "भावों की मुक्ति छंदों की मुक्ति चाहती है। यहां भाषा, भाव और छंद तीनों स्वच्छंद हैं।"

प्रारम्भ में निराला के मुक्त छंद का पुरजोर विरोध हुआ था। उसे रबड़ छंद, केचुआ छंद आदि नाम देकर कुछ साहित्यकारों ने उसका उपहास किया था पर धीरे-धीरे यह छंद साहित्य में अपना स्थान सुरक्षित करता गया और एक ऐसी स्थिति भी आई, जब विरोधियों ने भी उसके महत्त्व को स्वीकार किया।

पं॰ नंददुलारे वाजपेयी ने लिखा है- "शक्तिपूजा के आरम्भ की पंक्तियों में भाषा की एक ऐसी क़वायद है जिसका समर्थन केवल यह कहकर किया जा सकता है कि हिंदी में भी ऐसी भाषा लिखी जा सकती है।"

Scanned by CamScanner

रामविलास शर्मा ने निराला की काव्य यात्रा को तीन चरणों में विभाजित किया है -

प्रथम चरण (1921-36)
द्वितीय चरण (1937-1946)
तृतीय चरण (1950-1961)

बोली माता तुमने रवि को जब लिया निगल
तब नहीं बोध था तुम्हें, रहे बालक केवल,

प्रतिपल-परिवर्तित-व्यूह-भेद कौशल समूह-
राक्षस-विरुद्ध-प्रत्यूह,-क्रुद्ध-कपि-विषम हूह-

अनिमेष-राम-विश्वजिद्दिव्य-शर-भंग भाव

देखते हुए निष्पलक याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान पतन,

खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन

है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार

वह एक मन रहा राम का जो न थका
जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय

दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही। (सरोज स्मृति)

Scanned by CamScanner